* Dated 08/05/2020 B.ed 2nd year 2018-2020 Time 1:15 - 2:00

पर्यावरण शिक्षा

* पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में पर्यावरण असन्तुलन के कारण विभिन्न प्रकार की घटनाओं ने मानव को यह सोचने के लिए विवश कर दिया है कि वह किस प्रकार पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूकता लाकर स्वस्थ पर्यावरण विकसित करने का सार्थक प्रयास कर सकता है। पर्यावरण शिक्षा के प्रमुख माध्यम अखबार, रेडियो, टेली विजन, समाचार लेख, वार्तालाप, परिचर्चाओं आदि के माध्यम से जन जागृति लाई जा सकती है।

* पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता

* उत्तम नागरिकता का विकास।
* सामाजिक भावना का विकास।
* वायु प्रदूषण की समस्याओं से परिचय।
* जल प्रदूषण की समस्याओं से परिचय।
* ध्वनि प्रदूषण की समस्याओं से परिचय।
* मृदा प्रदूषण की समस्याओं से परिचय।
* पर्यावरण संरक्षण करना।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

* जनसंख्या वृद्धि को रोकना ।
* वनीय जीवन का संरक्षण करना ।
* विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास करना ।
* सामान्य जानकारी से परिचित कराना ।
* सामाजिक समस्या का समाधान करना ।
* ऐसे बालक जो मेधावी है एवं चुनौतिपूर्ण कार्यों में उत्साह दिखाते है उनका सहयोग प्राप्त करना ।
* राष्ट्रीय धरोहर के प्रति निष्ठा रखना ।
* राष्ट्रीयता एवं विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना ।

* पर्यावरण शिक्षा का महत्व

* बढ़ते यातायात के साधनों से प्रदूषण का खतरा पर्याप्त मात्रा में बढ़ गया है। वाहन-प्रदूषण को रोकने के लिए पर्यावरण शिक्षा एक महत्वपूर्ण साधन है।
* पर्यावरण-शिक्षा हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' का पाठ पढ़ाती है।

* पर्यावरणीय शिक्षा में शिक्षकों की भूमिका

* बच्चों को प्रकृति के आश्चर्यों को सराहने, उनकी सुरक्षा और संरक्षण को विकसित करने में मदद करना ।
* बच्चों में पर्यावरण की सुरक्षा के लिए भाव, मूल्य दक्षता और पर्यावरण हितैषी व्यवहारों को विकसित करना ।
* स्थानीय पर्यावरणीय समस्याओं को शिक्षा से सम्बद्ध करना और बच्चों को उन समस्याओं के समाधान हेतु प्रोत्साहित करना ।
* बच्चों को पर्यावरणीय परिवर्तनकारी के रूप में सहपाठियों, भाई बहनों एवम माता-पिता के व्यवहारों को प्रभावित करने के योग्य बनाना ।
* बच्चों को एकजुट होकर काम करने और समस्याओं के समाधान करने के लिए प्रोत्साहित करना ।
* बच्चों में समीक्षात्मक सोच का विकास करना ।
* बच्चों में समस्या-समाधान का विकास करना ।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

* बच्चों में निर्णय लेने का विकास करना।
* बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना।
* बच्चों में पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करना।
* बच्चों में प्राकृतिक संसाधनों की सराहना हेतु सीखने के अवसरों का निर्माण करना।
* पर्यावरण के बारे में ज्ञान प्राप्त करना तथा उसका स्वरूप से लगाव महसूस करना।
* इस तथ्य को स्वीकार करना कि अन्य जीवों में भी विशिष्ट क्षमता है।
* इस तथ्य को स्वीकार करना कि भूत, वर्तमान तथा भविष्य एक प्राकृतिक प्रक्रिया है।
* ऐसे बालक जो प्रखर बुद्धि के हो उनका पर्यावरण संरक्षण में सहयोग प्राप्त करना चाहिए।
* छात्रों से वृक्षारोपण तथा हरीभरी वाटिकाओं का निर्माण करना।
* पार्कों तथा जल स्थलों की सफाई कराना।
* कूड़ा-करकट को उपयुक्त स्थान पर रखने की आदत विकसित करना।
* छात्रों को सामाजिक व विकास की जानकारी देना।

HARVESH CHANDRA
ASSISTANT PROFESSOR
08/05/2020.

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner